OM-7- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 09/06/2021 10:08 AM Page 2

परमात्मा तक पहुंचने का पथ - पुरुषार्थ

मनुष्य सर्व प्राणियों में श्रेष्ठ गाया हुआ है। मनुष्य की तरह हर प्राणी जन्मता-मरता है किन्तु उन सबमें जन्म और मृत्यु तक लगभग वैसा ही होता है जैसे जन्मा वैसे ही जीकर लौट गया। मुनष्य में भूत,वर्तमान,भविष्य के प्रति विचार व व्यवहार होता है। वह आज की भी सोचता है तो भविष्य की भी। मनुष्य का विवेक और प्राणियों से ज़्यादा विकसित है।

जीवन अनंत आनंद का कोश है। मनुष्य सिर्फ़ जीने के लिए ही पैदा नहीं हुआ, वह जानने के लिए भी पैदा हुआ है। जीवन का सच्चा आनंद स्वयं को जानने में है। अपने आपको जानने वाला ही ज्ञानी है। अगर जीवन का आनंद लेना है तो जीवन को अर्थ देना होगा। अर्थहीन जीवन व्यर्थ है। और अर्थ पूर्ण जीवन परमार्थ है। हम देह प्रेमी नहीं, आत्म प्रेमी बनें। यानी कि स्वयं को जानें। आत्मा की बेसिक नीड क्या है उसे जानें। आत्मा को क्या चाहिए वह उसे दें। अगर उसकी नीड को पूर्ण नहीं कर पाते, वहीं तनाव है। तनाव मानो आवश्यकताओं की पूर्ति न होना। बिना लक्ष्य के जीवन पर चलो तो भी व्यर्थ है, क्योंकि उसमें चलना तो बहुत है लेकिन पहुँचना कहीं नहीं। ठीक वैसे ही जैसे कोल्हू का बैल, रातभर चलता रहे, सवेरा हुआ तो भी वहीं का वहीं।

आदमी का वास्तविक जन्म उस दिन होता है, जिस दिन वह जान लेता है कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है। जिस दिन जीवन में आध्यात्मिकता का प्रवेश होता है, वही सही जन्मदिन है। अभी हम जिसको जीवन कहते हैं, वह एक मूर्छा है, एक निद्रा है, दुःख की लम्बी कथा है, एक अर्थहीन, खालीपन है।

मनुष्य प्रदर्शन में जी रहा है इसलिए आत्मदर्शन से वंचित है। दूरदर्शन हमें स्वयं से दूर ले जाता है। इसलिए दूरदर्शन पर नहीं,आत्मदर्शन पर विश्वास रखना चाहिए। धर्म, प्रदर्शन की चीज़ नहीं, आत्मदर्शन की कला है। उसे ही अध्यात्म कहते हैं।

आध्यात्मिकता ही स्वयं को जानने का, पहचानने का माध्यम है, साधन है। इस टूल से स्वयं में निहित स्व ऊर्जा को जान जाते हैं। उस ऊर्जा को, शक्ति को पहचानने के बाद, उसे कहाँ, कब, कितना मात्रा में उपयोग करना, यह भी जीवन में आ जाता है। समूची प्राणी जाति में मनुष्य एक मात्र ऐसा प्राणी है जो अधूरा पैदा होता है। पशु के अधूरा पैदा होने का प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि उसका चरम विकास संभव ही नहीं है। मनुष्य अधूरा है, परमात्मा पूर्ण है। चरम विकास सिर्फ मनुष्य का ही संभव है। मनुष्य बीज की तरह पैदा होता है, यदि पुरूषार्थ नहीं करता है तो बीज ही रह जाता है और फिर वो बीज सड़ जाता है। खुले में पड़े हुए बीज पर बाह्य प्रभाव अवश्य पड़ता है, चीटियाँ उसे खा जाती हैं या वह पड़े-पड़े वृक्ष बनने की योग्यता खो देता है। मनुष्य की नियति है कि वह इन्सान की तरह जन्में, देवता की तरह जीएं और भगवान की तरह मरें। यानी कि जो उसे जीवन मिला है, उसको बेहतर जीकर वापिस जाये। जैसे आये थे, वैसे न जाये। वैसे हम कहते हैं - 'खाली हाथ आये खाली हाथ जाना'। यह उक्ति सार्थक नहीं है। हम जन्मते हैं तब भी पूर्व के अच्छाई व बुराई को लेकर और जाते हैं तो भी जीवन भर जो भी किया उसे लेकर ही जाते हैं। तब तो कहते हैं मनुष्य जन्म दुर्लभ है। क्योंकि मानव शरीर में रहते ही देवता बन सकते हैं। क्योंकि हमारी बुद्धि विकसित है। अच्छा क्या, बुरा क्या, इस भेद को तय करने में समर्थ हैं। तब तो कहा मनुष्य पुरूषार्थ कर परमेश्वर भी बन सकता है।

अथॉरिटी • जिस शक्ति की आवश्यकता हो, वो शक्ति हाज़िर हो जाये

दिल से बाबा कहने वाले को बाबा की मदद का अनुभव न हो, यह हो ही नहीं सकता, यह असम्भव है। लेकिन मदद लेने की विधि है 'हिम्मत'।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

एक 'मेरा बाबा' ही है हर परिस्थिति में सेफ्टी का साधन

आप सभी ने अपने भाग्य की बातें सुनी और सबसे पहला भाग्य तो हम सभी हर कल्प में बाबा के भाग्यवान बच्चे बनते आये हैं। अभी भी बने हैं और हर कल्प में हम ही बनेंगे, यह कितना बड़ा भाग्य है! बाबा कहते हैं-16 हज़ार की माला में भी जो लास्ट नम्बर का दाना है वो भी बहुत भाग्यवान है। कई समझते हैं हमारा क्या भाग्य है? इतना बड़ा भाग्य दिखाई नहीं देता है, क्योंकि सोचते हैं कि मेरे में तो कोई खास विशेषताएं दिखाई नहीं देती हैं, न कोई इतना बड़ा भाग्य है। लेकिन बाबा हम हर बच्चे को भाग्यवान की नज़र से ही देखते हैं। और कोई भी विशेषता आप में न हो, ऐसा हो नहीं सकता। आपकी एक विशेषता बाबा को बहुत पसंद आई इसलिए आपको अपना बना लिया। आपने पहचान करके दिल से कहा 'मेरा बाबा' तो यह विशेषता कम नहीं है। तो मेरे लिए बाबा आया है, मुझ अर्जुन को ज्ञान सुनाने और मैं ही बाबा का विशेष बच्चा हूँ, इसी विशेष रूप से बाबा हरेक को देखता है क्योंकि कोटो में कोई तो आप हो ही ना! कोई में भी कोई हो, क्योंकि बाबा को तीसरे नेत्र से पहचान कर, सम्बन्ध जोड़ कर कहा है कि 'मेरा बाबा'। तो जहाँ मेरापन होता है वहाँ अधिकार होता है लेकिन उस अधिकार से हम याद नहीं करते हैं तो फिर बाबा की मदद का अनुभव इतना नहीं होता है। बाबा जो श्रीमत देते हैं, उस पर हाँ जी, हाँ जी करते चलो तो हज़ूर आपके आगे हाज़िर हो जायेगा।

दिल से बाबा कहने वाले को बाबा की मदद का अनुभव न हो, यह हो ही नहीं सकता, यह असम्भव है। लेकिन मदद लेने की विधि है 'हिम्मत'। हमें पहले हिम्मत तो रखनी होगी, हम हिम्मत का एक कदम उठायेंगे तो बाबा पदमगुणा मदद करेंगे। बाबा हमारे साथ कम्बाइंड हैं, तो वो मददगार बनने में कैसे भूल कर सकता! सिर्फ हम उस अधिकार से बाबा को अपना बनाकर रखें।

बाबा कहते हैं मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तो बच्चे क्या हुए? मास्टर सर्वशक्तिवान। बाप की जो प्रॉपर्टी, वह बच्चे की प्रॉपर्टी नैचुरली हो ही जाती है। तो बाबा के पास कौन-सी प्रॉपर्टी है? शक्तियों की, गुणों की प्रॉपर्टी यही तो शिवबाबा की प्रॉपर्टी है। उसके हम मालिक हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। बाबा ने कहा हे मेरे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे! जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता हो, उन शक्तियों को ऑर्डर करो तो वो शक्ति हाज़िर हो जाये। बाबा कहते हैं तुम अपने इस स्वमान को पहचानो, भले कोई और स्वमान याद नहीं आता है- "सिर्फ बाबा मेरा है", यह एक शब्द ही याद कर लो तो भी नशे और खुशी में रहेंगे।

मास्टर सर्वशक्तिवान अगर कहे कि मेरे में सहनशक्ति नहीं है इसलिए मैं फेल हो जाता हूँ। मेरे में समाने की शक्ति थोड़ी कम है, लेकिन जो अपनी चीज़ है वो समय पर काम न आये तो फिर क्या फायदा? तो यही एक शब्द याद करो कि मेरा बाबा 'करावनहार' है। जैसे कर्मेन्द्रियों से काम कराने वाली मैं करावनहार आत्मा हूँ, तो मालिक कर्मेन्द्रियों से अच्छा काम ही करायेगा ना! ऐसे बाबा करावनहार करा रहा है, मैं तो निमित्त हूँ। योग और कर्म दोनों का बैलेंस हो तो हर कर्म शक्तिशाली ही होगा, क्योंकि सर्वशक्तिवान की याद में किया हुआ कर्म है। जो कर्मयोगी बनके कर्म करता है हर कर्म में सफलता उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो जाता है।

सुस्ती को ऐसे अवॉयड कर दो जो उसका नाम-निशान भी न रहे

नवीनता • ज़रा भी साधारणता संकल्प में न हो, हो स्वच्छता और श्रेष्ठता

राजयोगिनी दादी जानकी जी

संगमयुग पर बाबा सम्मुख आता है। एक है मनमुख, दूसरा है सम्मुख, तीसरा है गुरुमुख। मन या तो अपने मुख को देखता है या दूसरे के मुख को देखता है। है तो भक्ति की बातें पर मनमुख और गुरुमुख में बहुत फर्क है। गुरुमुख सदा ही गुरु को देखता है। जब सम्मुख बाप मिला तो गुरुमुख बन गये।

अन्तिम जन्म की यह अन्तिम घड़ियां हैं, जो करना है अभी कर लो। जैसे ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने पक्का कराया, ये तुम्हारे बहुत जन्म के अन्त का जन्म है। तुम वही श्रीकृष्ण की आत्मा हो, चक्र पूरा किया है, अब तुमको फिर से वही बनना है। तो उसको अपना बना लिया है। ऐसा हमारा हाल है?

एक-एक रूहरिहान करें आपस में। एक है चिटचैट, दूसरी है रूहरिहान, तीसरी होती है बातें। चिटचैट में हँसना-बहलना होता है। बातों में तो कभी खिटपिट भी होती है, मतलब की बात कर। मतलब की बात वो हैं जो बाबा सुनाता है। जिसमें हमारा भी भला और औरों का भी भला। पर रूहरिहान वन्डरफुल है। रुह अपने से बात करती है, बाबा से बात करती है फिर औरों से बात करती है। रूह को सिखलाने वाला बाबा है। बाबा, बाप के रूप में सिखलाता है, सतगुरु के रूप में सिखलाता है, वो बातें अच्छी तरह से अन्दर रूह में चली जायें तो बाबा हमारे से रूहरिहान करेगा। मुख से भी करेगा पर अन्दर भी करेगा।

अभी अन्तिम जन्म की घड़ियां हैं इसलिए एक-एक घड़ी सफल हो। दिन में भी आठ घड़ी होती हैं। आठ घड़ी में भी देखें, हर घड़ी अच्छी बीते। इतना अटेन्शन रख हर घड़ी चेकिंग हो कि मैंने इन आठों घड़ियों में क्या उन्नति को पाया।

हमको अभी क्या न्यूनेस लानी है? जैसे दिन और रात में अन्तर है, वैसे नवीनता इतनी लानी है। गाया ही जाता है पुराना साल पूरा हुआ माना पुरानी बात पूरी हुई, नया सूर्य उदय हुआ है। कुछ तो रोशनी होते भी अन्धकार में रहते हैं। कहते हैं जागा तो है, पर नींद आ रही है। थोड़ी भी सुस्ती ज्ञान मार्ग की वैरी है। सुस्ती को अवॉयड करना है, उसका नामनिशान न रहे तो नवीनता आयेगी। न्यूनेस में उमंग-उल्लास हो, न्यूनेस प्रेरणा देने लायक हो। नवीनता क्या लानी है? ज़रा भी साधारणता संकल्प में न हो, स्वच्छता और श्रेष्ठता। स्वच्छता तो ऐसी जैसे बीज, ताकत है उसके अन्दर में, दिखाई नहीं पड़ता है परन्तु पता है कि ये बीज क्या है। बच्चे याद और प्यार को ऐसा अन्दर में समा लेवें जो याद स्वरूप बन जायें।

इस बात पर विचार करें कि लाइट किसको कहा जाता है, डबल लाइट किसको कहा जाता है? शक्ति के अनुभव की छाप लगती है। पर हमारे अन्दर ऐसी शक्ति भरी हो जिससे दूसरे भी शांत हो जायें।

अब पुरुषार्थ का नहीं, अब है पास विद ऑनर होने का समय

अनोखा मंत्र • निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

कई पूछते हैं कि हम क्या पुरुषार्थ करें? हम कहती कि

1. बाबा ने जो निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी का मंत्र दिया है, वह सदा याद रहे। उसका ही पुरुषार्थ करो। 2. जीवन में त्याग, तपस्या, सेवा यह है हमारा पुरुषार्थ। 3. हमें बाबा समान कर्मातीत साक्षात्कारमूर्त बनना है। इसमें सबकुछ आ जाता, बुद्धि दिव्य हो जाती है। कई कहते हैं हम क्या करें हमारी तो पुरुषार्थी लाइफ है, वातावरण ऐसा है...गलतियां हो जाती हैं, पुरुषार्थी हूँ। यह पुरुषार्थी हूँ, पुरुषार्थी हूँ... कहकर उसकी भी पालना करते हैं। अब तक भी हम यही शब्द कहते रहेंगे तो यह भी जैसे उनकी पालना करते हैं। क्यों नहीं कहते कि हमारे एग्ज़ाम के दिन हैं, पढ़ाई पूरी हुई, अभी हमें पेपर में पास विद ऑनर होकर दिखाना है। अभी कोई नया लेसन मिल रहा है क्या? या और कोई नया लेसन मिलने वाला है? बाबा ने सब कुछ पढ़ा दिया। मुरली ही बाबा की पढ़ाई है। उसको रिवाइज़ करते भी नित्य नई लगती है, परन्तु महावाक्य तो पुराने ही हैं ना! पढ़ाई तो हमारी पुरातन से पुरातन चली आ रही है, आदि में मनमनाभव, अन्त में भी मनमनाभव। नया जन्म मिला, वर्सा बाबा ने दे दिया, अधिकारी बना दिया, बाकी क्या चाहिए! सिर्फ अशरीरी बनने की मेहनत करनी है। यह योग की गहरी अनुभूति जितनी हम करें उतनी थोड़ी है, कम है। ज्ञान सागर बाबा ने जो हमें गुणों का खज़ाना दिया है, बुद्धि में वह भरपूर रखें, वह कमाई हमारे जमा के खाते में भरपूर होती रहे।

कई चलते-चलते थक जाते हैं, लेकिन हमारा बाबा कभी थकता है? तो हम भी बाबा जैसे अथक क्यों नहीं बनते हैं। इसके लिए टाइम पर सोओ, टाइम पर उठो तो थकावट की बात ही नहीं। लेकिन थकावट तब होती है जब दिलशिकस्त होते हो, अलबेले होते हो। तो हमें न अलबेला होना है, न सुस्त होना है। सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख सदा रखो। तीसरा अपनी रुहानी मौज-मस्ती में रहो। कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती है एक कान से सुन दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। जैसे इस कान में पानी पड़ा है तो यहाँ से ही निकालेंगे ना, ऐसे ही यहाँ से ही सुनो यहाँ से ही निकाल दो। उसे निकालने के लिए क्यों टाइम वेस्ट करें, यह भी रांग है।

अब ऐसी कोई घड़ी न आये जो अन्दर बेचैनी व हैरानी महसूस हो। मैं आज हैरान हूँ, परेशान हूँ, अब इस भाषा को समाप्त कर दो। न ऐसी बात सुनो, न हैरान हो। किसी की फालतू बातें न सुनो, न उसका चिंतन करो। हाँ, किसी का मन भरा हुआ है तो जिसकी डयूटी है उसके पास जाकर सुनाके मन को हल्का करें। ऐसे नहीं आपने दिल हल्की की और मैंने वह बात सुनकर दिल भारी कर ली। न हमें भारी होना है, न किसी को भारी करना है और न कभी मन को भारी रखना है। बात आई सेकण्ड में समाप्त हुई। इसी को कहा है ड्रामा की बिन्दी लगाना सीखें- इसकी विधि है ड्रामा बिन्दु। बातें आयेंगी परन्तु आयी, गयी। हर एक के प्रति हमारे अन्दर शुभ संकल्प हों। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो जो सूक्ष्म में भी व्यर्थ का नाम निशान समाप्त हो जाये।